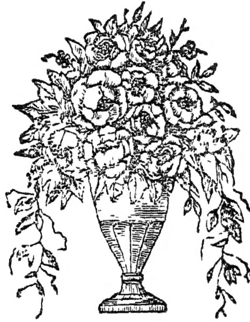
बिरहा ।

नायिकाभेद

बाबू रामकृष्णवर्म्मा

उपनाम बलबीर कृत ।



काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १९०० ई० ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य /)

भूमिका।

इस बिरहे छन्द की चाल हमारे इस पश्चिमोत्तर प्रान्त में प्राय: छोटी जातीं अर्थात् अहीर कहार और गँड़ेरियों में बहुत है, परन्तु जैसा यह छन्द रोचक है वैसो साधु कबिता इसमें नहीं देखी जाती। यदि इस छन्द में भी उत्तम कबिता का प्रचार होता तो इन जातियों में भी उच्च जाति की नाईं नायक नायिका और अलङ्कार इत्यादि का ज्ञान भली प्रकार होजाता। प्राय: इन जातियों में पढ़ने लिखने की चाल बहुत कम है। इन बिरहों के छापने से एक तात्पर्य्य हमारा यह भी है कि इन लोगों में पढ़न लिखने की रुचि हो जावे, हमे विश्वास है कि बिरहों की उत्तमता से कदाचित् ऐसा ख्याल इन लोगों को हो "पढ़ ले मरदे, देवनागरी में तो बलबिरवा का बिरहा छपल् हौ आठ दिन में त देवनागरो आवैला"। इस छन्द में प्रत्येक चरण में दो जगह यति होती है, प्रथम यति १६ अचर पर और दूसरो दस अचर पर। अन्त में एक गुरू और लघु दोहे की नाईं होते हैं। दोनों चरणों के प्रथम पद में दो अचर बढ़ भी सकते हैं अर्थात् १८ अचर और १० अचर का भी चरण होता है जैसे बिरहा नं० १० और बिरहा नं० २४, कहीं कहीं मोड़ के साथ एक अचर खींच लेनेसे प्रत्यच

नायिकाभेद, बिरहारागमें।

बाबू रामकृष्णवर्म्मा उपनाम बलबीर कृत।

आलम्बन विभाव।

जिसके आश्रय से रस का ठहराव होता है, उसको आलम्बनविभाव कहते हैं, जैसे नायिका और नायक ॥ १ ॥

लजिया दबावै मनमथवा सतावै
मोसे, एको छन रहलो न जाय।
लखि बलबिरवा जमुनवा के तिरवाँ री
हियरा क धिरवा नसाय ॥ १ ॥

नायिका।

सुन्दर और जवान स्त्री को नायिका कहते हैं, इनके कर्म्मानुसार ३ भेद हैं, स्वकीया, परकीया और सामान्या। और उमर के अनुसार भी ३ भेद हैं, मुग्धा, मध्या, और प्रौढ़ा ॥ २ ॥

रुपवा के भरवा त गोरी से पयरवा
रे सोझवा धरल नाहीं जाय।

आज बरसाइत रगरवा मचावो जिन
नहकै झगरवा उठाय ।
अपनौं ही बरवा मैं पूजौं बलबिरवा
पीपरवा * पूजन तूही जाय ॥ ६ ॥

मुग्धा ।

जिस स्त्री को यौवन उभड़ आया हो परन्तु उसे काम की इच्छा न हो उसे मुग्धा कहते हैं, इनके दो भेद हैं, अज्ञातयौवना और ज्ञातयौवना । जिस मुग्धा को अपने जवानी आने की खबर नहीं है, उसे अज्ञातयौवना कहते हैं, और जिस मुग्धा को अपनी जवानी का ज्ञान है, उसे ज्ञातयौवना कहते हैं इनके दो भेद हैं, नवोढ़ा और विस्रब्धनवोढ़ा ।

अज्ञातयौवना का उदाहरण ।

तैहूं न बतावै गोइयां झूरे भरमावै
काहे सवती क मुहवां नराज ।

* पीपर का वृक्ष अथवा पराया पी । बरसाइत के दिन बर (वृक्ष) की पूजा होती है । बर से तात्पर्य बट वृक्ष का भी है और अपना बर अर्थात् अपने पति का भी है ।

उठलैं जोबनवां नैहर के भवनवां
गवनवां भयल दिनचार।
भावै नाहीं गोरिया के गुड़िया क खेल
नीक लागे बलबिरवा भतार ॥ ११ ॥
फिरलीँ रोहनियाँ जोबनवाँ क पनियां
जवनियां चढ़ल घनघोर।
रोवैलीँ सवतिया निरखि कै पिरितिया
बढ़त बलबिरवा क जोर ॥ १२ ॥
तोहरी नजरिया री प्राऽनपिअरिया
मछरिया कहलैँ कबि लोग।
तोहरा जोबनवां त बेलवा क फल
बलबिरवा के हथवाही जोग ॥ १३ ॥

नवोढ़ा।

जो नायिका लाज और भय से अपने पति से नहीं मिला चाहती उसे नवोढ़ा कहते हैं, जैसे:—

हथवा पकरि दुओ बहियां जकरि पिय
सेजिया बैठावै जस लाग।

लजिया की बतिया मैं कैसे कहौं ए
भौजी जे मोरे बूते कहलो न जाय ।
पर के फगुनँवा की सिअली चोलियवा
में असों न जोबनवाँ अमाय ॥ १७ ॥

प्रौढ़ा ।

जो नायिका विहार में अत्यन्त चतुर और पूरी होती है, उसे प्रौढ़ा कहते हैं, प्रौढ़ा के २ भेद हैं, रतिप्रीता और आनन्दसंमोहिता ॥ १४ ॥

छतियां लगति रस बतियां पगति
सारी रतियां जगति बिच केल ।
मैया भैया न सुहावै मनमथवा सतावै
मन भावै बलबिरवा क खेल ॥१८॥

रतिप्रीता ।

जो नायिका नायक के पाने पर यह मनावे कि भोर न हो और उसका नायक चला न जावे, उसे रतिप्रीता कहते हैं ॥ १५ ॥

दैया दैया कैके बलबिरवा मैं पायो
गुइयाँ सेजिया सुवायौं सुखधाम ।

सोनवा क पनवा क मोतिया क हिरवा क
काहे क बनल यह माल ?।
गरवा से हरवा उतारो बलबीर तनी
मोहूँको दिखाओ मोरे लाल ॥ २२ ॥

अधीरा ।

इसी प्रकार आदर सहित प्रत्यक्ष कोप करनेवाली स्त्री को अधीरा कहते हैं, यथा

झूरे झूरे दोषवा लगावैं बलबीर तोहें
लबरी सजनियांऽ मोर ।
रतियां के आवैं तौन चोरवा कहावैं तुम
सहुआ जे आये मोरे भोर ॥ २३ ॥

धीराधीरा ।

इसी प्रकार कुछ छिपा और कुछ प्रगट तथा आंसू सहित कोप प्रकाश करनेवाली स्त्री को धीराधीरा कहते हैं ॥

मुँह पिअरी परल दुओ अँखिया भरल
तोरा दुखवा न होला अनुमान ।
मोहैं दुखवा कवन मोरे सुख के भवन जहाँ
तुमसे रसीले मोरे प्रान ॥ २४ ॥

बगरै की कोठरी मे सूतब न दैया
उहाँ झपटला मुसवा बिलार ॥ २६ ॥

बर्तमान गुप्ता ।

मत मनवाँ में अनवाँ समुझ कुछ गुइयां
काहे सुँघली हौं मुहवाँ अहीर ।
मुँह सूँघे के करनवा क इतनै बखनवा
मखनवा खैलेस् बलबीर ॥ २७ ॥

भरली गगरिया उठौली जैसे गोइयां
तैसे बिछलल गोड़वा हमार ।
जो पै बलबिरवा न बहियां धरत
तो पै बही थी जमुनवां के धार ॥२८॥

बचनविदग्धा ।

बोलचाल की चतुराई से जो स्त्री पराये पुरुष से अपने प्रीति का काम निकाले उसे वचनबिदग्धा कहते हैं, जैसे:—

सखी न सहेली मैं तो पड़िल्यूं अकेली
मोरी, सोने सी इजतिया बचाव ।

कुइयां आधा मरद से बुढ़वा बेराम ।
ससुर भसुर छोड़ बचलैं केतने मोंहैं
नहकै करलैं बदनाम * ॥ ३२ ॥

अनुशयाना ।

जिस स्त्री का पर पुरुष मिलने का संकेत स्थान नष्ट हो जाये उसे अनुशयाना कहते हैं, जैसे—

सनहू उजारें गुइयाँ उखियौ उपारैं ई
किसनवन के तनिकौ न हेत ।
कवनो पुरनवा न बेदवा बखानैं अर-
हरिया क काटौ जनि खेत † ॥ ३३ ॥

* इस संसार में आधी पृथ्वी है जिसका आधा भाग नदी ताल इत्यादि से रुका है, जो बची है उसमें भी आधे ही पुरुष हैं आधी स्त्रियां, उन आधे पुरुषों में भी आधे लड़के बूढ़े और बीमार हैं, तिस में भी ससुर भसुर को छोड़ कर बाकी बचही कितने गये जो मुझे कुलटा कुलटा कह कर नाहक बदनाम करते हैं ॥ † जैसे पीपल और तुलसीके वृक्ष काटने की मनाही है वैसे ही सन और अरहरइत्यादि के काटने की मनाही क्यों नहीं का ?

हिरवा क हरवा सु गरवा क देके बल-
बिरवा चलल परदेस ॥ ३६ ॥

अन्य सुरतदुःखिता ।

अपने नायक के सुरत के चिन्ह को अन्य स्त्री पर देखकर खेद करनेवाली स्त्री को अन्यसंभोगदुःखिता कहते हैं यथाः—

प्यारे को बुलावन पठाई तोकों गुइयां
जिन हाँफै री सुनावै मोंहि हाल ।
परम रँगीली मोरी सजनी रसीली
कैसे पायो बलबिरवा रसाल * ॥३७॥

गर्विता ।

जो नायिका अपने नायक के प्रेम अथवा अपने रूप का गर्व करे उसे क्रम से प्रेमगर्विता वो रूपगर्विता कहते हैं । यथाः—

* नायक को रसाल और अपनी सखी को जो रसीली कहा इससे साभिप्राय विशेषण है और सखी को रंगीली कहने से भी वही अभिप्राय है ।

रजवा करत मोर रजवा मथुरवा में
हम सब भइलीं फकीर ।
हमरी पिरितिया निबाहे कैसे ऊधो
बलबिरवा की जतिया अहीर ॥ ४१ ॥

खण्डिता ।

दूसरी स्त्री के संभोग के चिन्ह सहित जिसका नायक प्रात: काल उसके घर आवे और वह कोप करे तो ऐसी स्त्री को खण्डिता कहते हैं । यथा:—

ओठवा के छोरवा कजरवा कपोलवा
पै पिकवा की परली लकीर ।
तोरी करनी समुझ के करेजवा फटत
दरपनवां निहारो बलवीर ॥ ४२ ॥

तोरी लटपट पगिया औ डगमग
डगिया सु अगिया लगावै मोरे जान।
छाओ छाओ वहीं गेहिया लगाओ

इतनै कह्यो मैं हँस रतियाँ कहां ते
बस आवत अलसभरे भोर ॥ ४६ ॥

विप्रलब्धा ।

संकेत स्थान में अपने प्रिय को न पाकर जो स्त्री व्याकुल होती है उसे विप्रलब्धा कहते हैं । यथा:—

तन तपवा तयल, मन दपवा दयल,
धन-मुँहवा गयल मुरझाय ।
हिय सधवा हटल जासों जियरा पटल
बलबिरवा भेटल नाहीं हाय ॥ ४७ ॥

उत्कण्ठिता ।

नायक के संकेत स्थान पर न आने के कारण जो नायिका बितर्क करे उसे उत्कण्ठिता कहते हैं । यथा:—

डगरा के लोगवा से झगरा भयल
कीधों बगरा के लोगवा नराज ।
सगरा रयन मोहि तकतै बितल बल-
बिरवा न आयल् केहि काज ॥ ४८ ॥

गोरी तोहँ कोरवा में अपने वैसौले
होला प्यारो बलबिरवा निहाल ॥५१॥

अभिसारिका ।

प्रिय से मिलने के निमित्त ज्यों नायिका अपने नायक के पास जावे अथवा उसे अपने पास बुलावे उसे अभिसारिका कहते हैं । यथा:—

चल चल गोइयाँ तोरी बल बल
जाऊं होला पल पल मनुआ उचाट ।
फूलन-सेजरिया कोठरिया बिछौलै
बलबिरवा जोहला तोरी बाट ॥ ५२ ॥

प्रवत्स्यतपतिका ।

प्रिय के बिदेस जाने का हाल सुन कर जो नायिका व्याकुल हो उसे प्रवत्स्यतपतिका कहते हैं । यथा:—

दुखवा क बतिया नगीचवो न आवै
गुइयां हँसी खुसी रहला हमेस ।
बजुआ सरकि कर-कँगना भयल सुनि
प्यारे क गवनवां बिदेस ॥ ५३ ॥

तोरी सी पियरिया के गरवा लगावै धन
प्यारे बलबिरवा क भाग ॥ ५५ ॥

रूपक ।

गोरा गोरा रँग हो भभुतवा रमौले
मानो सेली लाल ललिया लकीर ।
रुपवा क भिखिया पलकिया में मांगैं बल-
बिरवा की अँखियां फकीर ॥ ५६ ॥

झप झप झपकैलीं सोई मानो गो-
रियारी झुक झुक करैंली सलाम ।
(तोरे) गोड़वा क धुरवा बरौनियां से
पोछैं बलविरवा क अँखिया गुलाम ॥५७॥

दूतीवचन ।

जनि घबरावै हबरावै मोरी गुइया
दैया काहे होली इतनी अधीर ।

उपन्यास ।

अघोरपन्थी	≠)
आनन्दसुन्दरी प्रथमभाग	॥)
अमलावृत्तान्तमाला	॥/
अकबर उपन्यास प्रथम भाग	॥
आर्य्यचरितामृत	/)
इलाउपन्यास	॥≠)
ईश्वरीलीला	≡)
उथेलो	≡)
कमलिनी उपन्यास	।/
कपटी मित्र अभो छपा	≡)
कुसुमलता चारो भाग	२।)
कटोराभरखून ।	॥≠)
कुलटा उपन्यास	≠)
चन्द्रकला	।)
चन्द्रप्रभापूर्णप्रकाश	।)
चित्तौरचातकी	॥)
चन्द्रकान्ता चारो भाग	२)
चन्द्रकान्तासन्तति पन्दरह हिस्सों में	७॥)